भारत के सपूत

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर म.प्र.

Bharat ke Saput-1.qxd 5/16/2008 2:44 PM Page 1

भारत के सपूत

(भाग-3)

कोड नं.	:	001 (III)
लेखक	:	नियति सप्रे
चित्रांकन	:	इस्माइल लहरी
संस्करण	:	प्रथम, मार्च 2008
प्रतियाँ	:	1000
मूल्य	:	रुपये 10.00

© **प्रकाशकाधीन**

प्रकाशक : **राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा**
भारतीय ग्रामीण महिला संघ,
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इंदौर-452010, म.प्र.
फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573
e-mail: srcmpindore@gmail.com
literacy@sify.com
Web: www.srcindore.org

मुद्रक : सिद्धार्थ ऑफसेट

Bharat ke Saput-1.qxd 5/16/2008 2:46 PM Page 2

आमुख

हमारे देश में अनेक स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं। जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया या जेल की कठोर यातनाएँ झेली। जैसे- बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचंद्र बोस, वल्लभभाई पटेल, चंद्रशेखर आजाद, शहीद भगतसिंह आदि।

इनमें से कुछ स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन परिचय एवं स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान पर आधारित पुस्तिकाओं की एक श्रृंखला राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा तैयार की गई। प्रस्तुत पुस्तिका 'भारत के सपूत भाग-3' में लेखन श्रीमती नियति सप्रे द्वारा किया गया है। चित्रांकन श्री इस्माइल लहरी ने किया है। केन्द्र इन सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है यह पुस्तिका नवसाक्षरों को रोचक एवं उपयोगी प्रतीत होगी। पुस्तिका के संबंध में आपके सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरि जिले में हुआ। उनके पिता संस्कृत के विद्‌वान थे। तिलक का जन्म का नाम केशव था। प्यार से सब उन्हें 'बाल' कहते थे और इसी से नाम वे प्रसिद्ध भी हुए। उस समय भारत में अंग्रेजों का राज्य था। पूरा देश पराधीनता से दु:खी था। ऐसे कठिन समय में बाल गंगाधर तिलक ने जनता का स्वाभिमान जगाया। उन्हें स्वतंत्रता का महत्व समझाया। 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं उसे लेकर ही रहूंगा।' यह उनका मूल संदेश था।

तिलक बहुत बुद्धिमान थे। पढ़ने-लिखने में उनका बहुत मन लगता

था। उन्होंने पढ़ने के अलावा भी खूब अध्ययन किया। तिलक बचपन से ही सच बात कहने में कभी घबराते नहीं थे। स्कूल के दिनों की घटना है। एक दिन कुछ बच्चों ने कक्षा में मूँगफली खाई और छिलके वहीं फेंक दिए। जब गुरुजी कक्षा में आए तब उन्होंने सभी बच्चों से पूछा। सभी बच्चे चुप थे। नाराज होकर गुरुजी ने बच्चों को स्केल से मारना शुरू कर दिया। जब तिलक का नम्बर आया तो उन्होंने कहा– 'मैंने मूँगफली नहीं खाई है, पर मैं किसी का नाम भी नहीं बताऊँगा।' गुरुजी ने उनके हाथ पर स्केल से मारा। उन्होंने चुपचाप सहन किया, परन्तु चुगली नहीं की।

तिलक शिक्षा के महत्व को बखूबी जानते थे। वे कहते थे राजनीतिक या सामाजिक कोई भी काम करने से पहले शिक्षा का होना बहुत जरूरी है। शिक्षा ही सभी कामों की बुनियाद है। तिलक ने अपने मित्र गोपालकृष्ण आगरकर के साथ मिलकर न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। कुछ समय पश्चात उन्होंने कॉलेज भी शुरू किया। स्कूल एवं कॉलेज खोलने से तिलक का शिक्षा के क्षेत्र में काम करने का सपना कुछ हद तक पूरा हुआ।

तिलक को युवा शिक्षार्थियों को ज्ञान देना तो अच्छा लगता था, लेकिन उन्हें अपने काम से संतोष नहीं मिलता था। वे देश को आजाद देखना चाहते थे। वे सभी भारतवासियों में आजादी की लो जगाना चाहते थे। तिलक ने जनजागरण हेतु प्रयास करने शुरू किए। उनका मानना था

कि अखबार ही जनजागृति का एक अच्छा माध्यम है। पहले उन्होंने 'केसरी' नाम का मराठी अखबार और 'मराठा' नाम से अंग्रेजी साप्ताहिक समाचार-पत्र शुरू किया। इन दोनों अखबारों में देशभक्ति के लेख छापने शुरू किए। जनता की शिकायतें इसके माध्यम से छपने लगीं। परन्तु इसके परिणामों से उन्हें संतोष नहीं मिल रहा था।

तिलक ने सोचा कि जनता से आमने-सामने बैठकर चर्चा करनी पड़ेगी। उन्हें संगठित करना पड़ेगा, तभी आजादी का आंदोलन आगे बढ़ेगा। इस दिशा में उन्होंने एक नया प्रयोग किया। उन दिनों पूरे महाराष्ट्र में गणेशजी की स्थापना घर-घर होती थी। उन्होंने गणेश उत्सव को सार्वजनिक स्वरूप प्रदान किया। गणेश उत्सव में मनोरंजन के साथ-साथ प्रबुद्धजनों के व्याख्यान भी रखे जाने लगे जिन्हें सुनने के लिए लोग इकट्ठा होते थे। यह तरीका लोगों को संगठित करने में सफल रहा। लोग आपस में मिलने-जुलने लगे एवं क्रांति की बातें भी करने लगे।

ब्रिटिश सरकार तिलक के भाषणों, लेखों से भयभीत हो रही थी। सरकार तिलक को गिरफ्तार करने का बहाना ढूँढ रही थी और उसे मौका मिल गया। कुछ युवा क्रांतिकारियों ने मि. रैड नामक अंग्रेज असिस्टेंट कमिश्नर की हत्या कर दी। इससे नाराज होकर अंग्रेज सरकार बेकसूर लोगों पर अत्याचार करने लगी। इस मामले पर तिलक ने अपने अखबार में लेख लिखकर अंग्रेजों के खिलाफ खूब

आग उगली। हत्यारों का पता लगाने के लिए पुलिस का जुल्म बढ़ता गया। तब तिलक ने एक जोरदार लेख लिखा। उसका शीर्षक था 'सरकार का दिमाग ठिकाने पर है क्या?' तिलक की कलम से निकली इस फटकार से सरकार बौखला गई। 29 जुलाई 1887 को राजद्रोह के आरोप में तिलक को कैद कर लिया गया। मुकदमा शुरू होने से पहले कुछ लोगों ने तिलक को सरकार से माफी मांग लेने की सलाह दी। तिलक जैसे स्वाभिमानी व्यक्ति को यह बात कतई मंजूर नहीं थी। उन्होंने वह सलाह ठुकरा दी। तिलक को डेढ़ साल की सजा हो गई।

देश में क्रांति शुरू हो चुकी थी। मुजफ्फरपुर में बम विस्फोट हुआ। जेल से छूटने के बाद तिलक ने फिर से अपने लेखों में अंग्रेजों की खूब निंदा की। तिलक को गिरफ्तार कर लिया गया। जब तिलक पर मुकदमा चल रहा था तब उनके कई मित्र उनसे मिलने आए। तिलक को मित्रों से मिलने की छूट थी। सभी मित्र उदास बैठे थे, पर तिलक शांत थे। हँसते हुए बोले- 'दादा साहब आज का रंग कुछ और ही लगता है। पर क्या करेंगे ज्यादा से ज्यादा काले पानी की सजा होगी। शायद हमारी आपके साथ यह आखरी चाय है।' उनकी हिम्मत, निडरता देखकर सभी दंग रह गए। तिलक को छः साल की काले पानी की सजा हो गई। पूरे देश में यह खबर आग की तरह फैल गई। चारों तरफ असंतोष फैल गया।

तिलक को स्पेशल ट्रेन से अहमदाबाद लाया गया। यहाँ से उन्हें रंगून ले गए। फिर मांडले जेल में कैद कर दिया गया। जेल मे सभी तिलक का बहुत आदर करते थे। उन्हें सभी सुविधाएं दी गई थीं। उनको लिखने के लिए टेबल, कुर्सी, किताबें, आराम कुर्सी सब कुछ दिया गया था। उन्हें मनचाहे कपड़े पहनने की अनुमति थी। इसलिए धोती, कुर्ता, पगड़ी, पुनेरी जूते आदि सब कुछ उनके पास था। तिलक जेल में भी शांत रहते और विचार करते रहते थे। हँसी-मजाक करना उन्होंने वहां भी नहीं छोड़ा था।

मांडले जेल में ही उन्होंने तीन महीनों में संपूर्ण 'गीता रहस्य' लिख डाला। इसके अलावा 'औरियन' और 'आर्कटिक होम इन वेदाज' दो किताबें भी मांडले जेल में ही लिखी गईं। 8 जून 1914 की सुबह तिलक की रिहाई हुई।

जेल का खाना, मधुमेह की बीमारी इन सब बातों से तिलक का स्वास्थ्य खराब रहने लगा था। इससे उन्हें बुखार आने लगा था। बीच-बीच में वे बेहोश हो जाते। बेहोशी में भी देशभक्ति की बातें ही करते रहते। 1 अगस्त 1920 को तिलक की जीवन यात्रा समाप्त हुई।

तिलक का चरित्र, स्वाभिमान, निडरता, देशप्रेम आदि गुणों के कारण लोगों ने उनको अपना मार्गदर्शक माना। 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसे मैं लेकर ही रहूँगा।' इस नारे से उन्होंने असंख्य भारतीयों के मन में स्वतंत्रता की ज्योति जलाई। ❑

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।' यह नारा भारतवासियों को नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने दिया था। नेताजी ने देश की आजादी के लिए आजाद हिंद फौज का गठन किया था। नेताजी देश के बाहर रहकर भी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। अंग्रेजों को हैरान कर रहे थे। नेताजी देश को आजाद देखना चाहते थे। एक बार नेताजी सुभाषचंद्र बोस से किसी ने कहा– 'नेताजी आप इस तरह कब तक कुंआरे रहेंगे? शादी क्यों नहीं कर लेते?'

नेताजी बोले– 'शादी तो मैं तब करूं, जब कोई मनचाहा दहेज दे।'

वह व्यक्ति बोला– 'कोई भी आपको मनमाफिक दहेज दे सकता है।'

नेताजी बोले– 'लेकिन दहेज में मुझे देश की आजादी चाहिए। है कोई देने वाला?'

इतना सुनकर वह व्यक्ति हक्का–बक्का रह गया।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। उनकी माँ का नाम प्रभावती व पिता का नाम जानकीनाथ बोस था। सुभाष को पाँच वर्ष का होने पर स्कूल में भर्ती कर दिया गया था। वे बचपन से ही पढ़ाई में होशियार थे। स्कूली पढ़ाई के दौरान वे विवेकानंद से काफी प्रभावित हुए। सुभाष ने उन्हीं से समाज कार्य करने की प्रेरणा ली। सुभाष ने अपने और आसपास के गाँवों में बाढ़ एवं महामारी के समय बहुत काम किया। देशभक्ति का जोश व भावना भी उनमें बचपन से ही थी। अत्याचार के विरोध में नेताजी तुरंत खड़े हो जाते थे।

कॉलेज के दिनों की एक घटना है। उन्होंने अंग्रेज प्राध्यापक पर हमला कर दिया था। वह प्राध्यापक सभी छात्रों को हमेशा अपमानित करता रहता था। सुभाष की हिम्मत देखकर सभी को बहुत आश्चर्य हुआ। इस घटना के कारण सुभाष को कॉलेज से निकाल दिया गया। इस बात का सुभाष के जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा। दो साल तक वे

पढ़ाई से दूर रहे तथा समाज कार्य करते रहे।

भाई एवं पिताजी के कहने पर फिर पढ़ाई शुरू की और भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में चुने गए। मगर अंग्रेज सरकार की नीतियों के विरोध में दो वर्ष बाद ही उन्होंने राजकीय सेवा से इस्तीफा दे दिया। नेताजी सुभाषचंद्र बोस जब आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण कर स्वदेश लौटे तो उन्हें एक लिखित परीक्षा भी देनी थी।

परीक्षा भवन में प्रश्न-पत्र देखकर उनका माथा ठनक गया। उसमें एक अंश था जिसका सभी को अपनी-अपनी मातृभाषा में अनुवाद करना था। उस अंश का आशय था कि भारतीय सैनिक प्रायः ईमानदार नहीं होते। नेताजी ने निरीक्षक से उस प्रश्न को हटा देने के लिए कहा।

निरीक्षक ने कहा कि यह काटा नहीं जाएगा। इसे विशेषकर रखा गया है। यदि आप इसे हल नहीं करेंगे तो नौकरी से वंचित होना पड़ेगा। इतना सुनना था कि सुभाषचंद्र तमतमाते हुए उठे। प्रश्न-पत्र के टुकड़े करते हुए वे बोले- 'ये धरी तुम्हारी नौकरी। अपने वतन के लोगों पर कलंक सहने से भूखे मर जाना मैं अच्छा समझता हूँ।' इसके बाद वे आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। वे देश को गुलामी से छुटकारा दिलाना चाहते थे।

सन् 1932 में नागरिक 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' के दौरान सुभाष जेल में थे। जेल में रहते हुए ही उन्हें कलकत्ता का महापौर चुना गया। वे जनता में कितने लोकप्रिय थे- यह इस बात का प्रमाण

था। द्वितीय विश्व युद्ध के समय नेताजी ने भारतीय सैनिकों पर हो रहे अत्याचार का विरोध किया। सुभाष को राजद्रोह के मामले में ग्यारह बार गिरफ्तार किया गया।

सन् 1941 में नेताजी को बीमार होने के कारण जेल के बजाय घर में ही कैद किया गया। नेताजी पहरेदारों को धोखा देकर वहाँ से भागने में सफल हो गए। उन्होंने मौलवी का वेश बनाया और जर्मनी चले गए। जर्मनी में उन्होंने अपना परिचय छुपाकर अंग्रेजों के खिलाफ एक गुप्त रेडियो स्टेशन से बोलना शुरू किया। यूरोप में रहने वाले भारतीयों ने उनका साथ दिया। अंग्रेजों के विरुद्ध उन्होंने एक मजबूत अंतरराष्ट्रीय मोर्चा तैयार कर लिया था।

सन् 1944-45 में नेताजी ने अपने फौजी साथियों के साथ 'दिल्ली चलो' का नारा बुलंद किया। जोशीले जुलूस का नेतृत्व करते हुए नेताजी फिर गिरफ्तार हो गए। लेकिन उनकी फौज ने इम्फाल (मणिपुर) और कोहिया (नागालैंड) पर कब्जा कर लिया था। नेताजी की यह नैतिक जीत थी।

18 अगस्त 1945 को सिंगापुर से ताईवान जाते हुए एक विमान दुर्घटना में नेताजी की मृत्यु हो गई। ऐसा कहा जाता है पर इसके कोई ठोस प्रमाण नहीं मिले हैं। आज भी भारत के लोग इस तेजस्वी नेता को जीवित मानते हैं। ❑

चंद्रशेखर आजाद

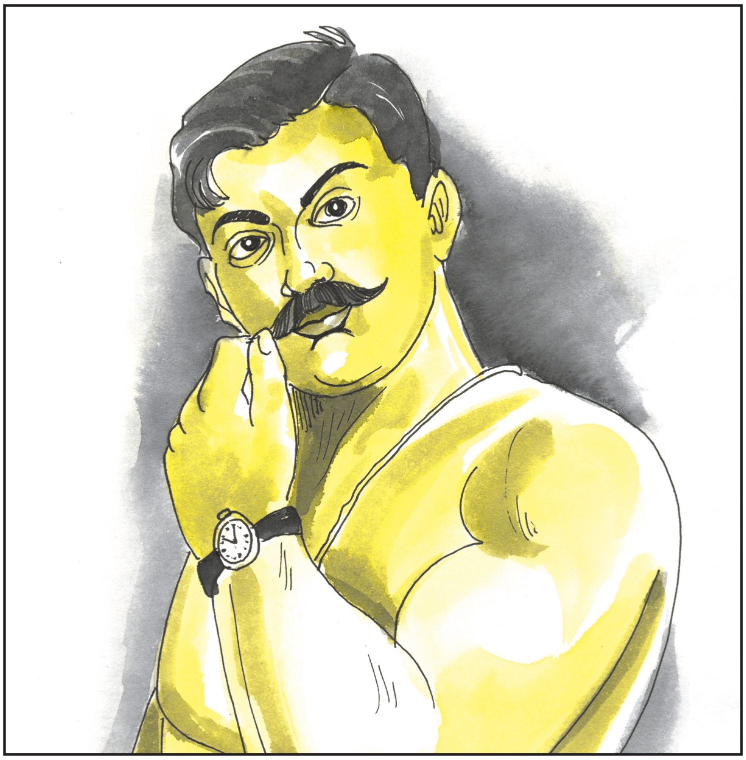

चंद्रशेखर आजाद का नाम हमारे देश के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों में लिया जाता है। उनका जन्म 23 जुलाई 1906 में झाबुआ जिले के भाबरा गाँव में हुआ था। चंद्रशेखर के पिताजी चौकीदारी करते थे। चंद्रशेखर अपने माता-पिता के बहुत लाड़ले थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव से ही शुरू हुई। उनका पढ़ने-लिखने में मन नहीं लगता था। उन्हें दूसरे लड़कों के साथ खेलने, तीर-कमान चलाने में ज्यादा मजा आता था।

गाँव का जीवन उन्हें अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन वे बिना किसी को बताए गाँव से चले गए। उनके माँ–बाप परेशान हो गए। कुछ दिनों बाद चंद्रशेखर ने काशी से पत्र भेजा। तब कहीं उनके माँ–बाप को चैन मिला। काशी में चंद्रशेखर ने एक संस्कृत स्कूल में दाखिला ले लिया था। उस स्कूल में खाना–पीना मुफ्त था, इस कारण चंद्रशेखर को तकलीफ नहीं हुई।

चंद्रशेखर हमेशा अन्याय के विरोध में अपनी आवाज उठाते थे। एक बार एक अंग्रेज युवक एक भारतीय लड़की को तंग करने लगा। कभी वह फल खाकर छिलके उसकी ओर फेंक देता, कभी उसे देखकर फब्तियाँ कसता और सीटियां बजाता। दूर खड़ा एक भारतीय युवक बराबर उसकी हरकत देखे जा रहा था। जब उसे सहन न हुआ तब वह क्रोधित होकर निकट आया और उसके गाल पर एक जोरदार तमाचा जड़ दिया। वह अंग्रेज युवक लड़खड़ाकर एक ओर जा गिरा।

उस भारतीय युवक ने अंग्रेज युवक की पहले तो तबीयत से मरम्मत की। फिर उस लड़की के पैरों में उसे झुकाकर माफी मंगवाई। वह नवयुवक और कोई नहीं क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद थे, जिन्होंने जीवनभर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया।

सन् 1920 में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन शुरू किया। चंद्रशेखर भी इस आंदोलन में शामिल हुए। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। अदालत

में मजिस्ट्रेट ने उनसे उनका नाम पूछा। उन्होंने कहा– 'आजाद'। पिता का नाम पूछा तो कहा– 'स्वतंत्रता' और पता पूछा तो उन्होंने बताया 'जेल'।

मजिस्ट्रेट जवाब सुनकर बहुत नाराज हुए। इस पर उन्होंने उनकी पीठ पर 15 कोड़े बरसाने का हुक्म दिया। हर कोड़े की मार पर उनके मुँह से निकलता– 'वंदे मातरम्'। खून बुरी तरह से बह रहा था, फिर भी उनके चेहरे पर पीड़ा का कोई भाव नहीं था। सिर्फ 15 वर्ष की उम्र में इतना जोश, साहस देखकर लोग दंग रह गए। सब लोग उन्हें 'आजाद' कहने लगे। इस तरह उनका नाम चंद्रशेखर आजाद पड़ा।

असहयोग आंदोलन की असफलता से सभी सेनानी निराश थे। उन्होंने कोई और उपाय ढूंढने की कोशिश की। कानपुर में एक सभा का आयोजन किया गया। इसमें भारत के अलग–अलग स्थानों के स्वतंत्रता सेनानियों ने भाग लिया। उस सभा में स्वतंत्रता सेनानियों का एक संगठन बनाया गया। चंद्रशेखर ने भी इसकी सदस्यता ली। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि उत्तरप्रदेश में रामप्रसाद बिस्मिल के मार्गदर्शन में संगठन काम करेगा। पंजाब में चंद्रशेखर आजाद के मार्गदर्शन में काम करेगा।

चंद्रशेखर आजाद कुशल संगठनकर्ता और क्रांतिकारियों के वीर नायक थे। अपने संगठन पर उनकी पूरी धाक थी। उनकी संगठन शक्ति के कारण ही ब्रिटिश सरकार भी उनसे काँपती थी। उन्होंने संगठन को मजबूत करने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी थी। संगठन को जब पैसों

की जरूरत महसूस हुई तो चंद्रशेखर और उनके साथियों ने सरकारी खजाने को लूटने की योजना बनाई।

9 अगस्त 1925 को काकोरी से आलमनगर जाने वाली ट्रेन में सरकारी खजाना था। उस खजाने को इन लोगों ने लूट लिया। यह लूट ब्रिटिश सरकार के खिलाफ एक खुली चुनौती थी। अंग्रेज सरकार ने इस डकैती में शामिल लोगों को ढूँढने की कार्यवाही शुरू की, परन्तु वे चंद्रशेखर आजाद तक नहीं पहुँच पाए। आजाद संगठन को पैसा कहाँ से मिले, इसी कोशिश में ही लगे रहते थे।

एक बार उनके संगठन में फिर पैसों की कमी हो गई। वे सोच में डूबे हुए थे तभी एक व्यक्ति आया। उसने कुछ रुपये उनके सामने रखे और बोला– 'आप देश सेवा में लगे हैं और आपके माता–पिता बहुत कष्ट में हैं। ये रुपया मैं उन्हें देना चाहता हूँ।' उसकी बात सुनकर आजाद मुस्कुराए और बोले– 'धन्यवाद, यह पैसा हमारे दल के काम आएगा। केवल चंद्रशेखर के माँ–बाप ही कष्ट में नहीं हैं। दूसरे साथियों के घरवाले भी तकलीफ में हैं। देश के लिए सबको बलिदान करना पड़ता है और उन्होंने वह पूरा पैसा देश के कार्य में लगा दिया।'

अगली योजना उन्होंने अंग्रेज पुलिस ऑफिसर की हत्या करने की बनाई और वे लोग सफल हो गए। इस प्रकार की गतिविधियों के कारण संगठन के कई सदस्य गिरफ्तार भी किए गए थे। लेकिन इन आजादी के

मतवालों को कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। उन्होंने फिर दिल्ली में एक डकैती की। पुलिस को मालूम हो गया कि इन दोनों योजनाओं में चंद्रशेखर भी शामिल हैं। अतः पुलिस ने चंद्रशेखर को ढूँढने की जोरदार कोशिश शुरू कर दी। उन पर दस हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया। पुलिस किसी भी तरह चंद्रशेखर को ढूँढ नहीं पा रही थी जिससे वह बौखला गई थी।

चंद्रशेखर को पुलिस शायद ढूँढ भी नहीं पाती, लेकिन चंद्रशेखर के साथी ने ही उनके बारे में पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस ने चंद्रशेखर को घेर लिया। चंद्रशेखर ने बिना घबराए पुलिस का डटकर मुकाबला किया। पुलिस ज्यादा थी। आखिर आजाद कब तक पुलिस की गोलियों का जवाब दे पाते। वे समझ गए अब बच निकलना मुश्किल है।

उन्होंने पिस्तौल को अपनी कनपटी पर रखकर गोली चला दी। कायर पुलिस वाले आजाद से इतने डरे हुए थे कि उनके मृत शरीर के पास भी जाने की हिम्मत न कर सके। वे उन पर लगातार गोलियों की बौछार करते रहे। काफी गोलियाँ दागने के बाद पुलिसवालों ने उनके मृत देह के पास जाने की हिम्मत की। सशस्त्र क्रांति का वह वीर 27 जनवरी सन् 1931 को अपना तेज दिखाकर बुझ गया। इस प्रकार चंद्रशेखर आजाद थे और आजाद ही रहे। ❑

सरदार वल्लभभाई पटेल

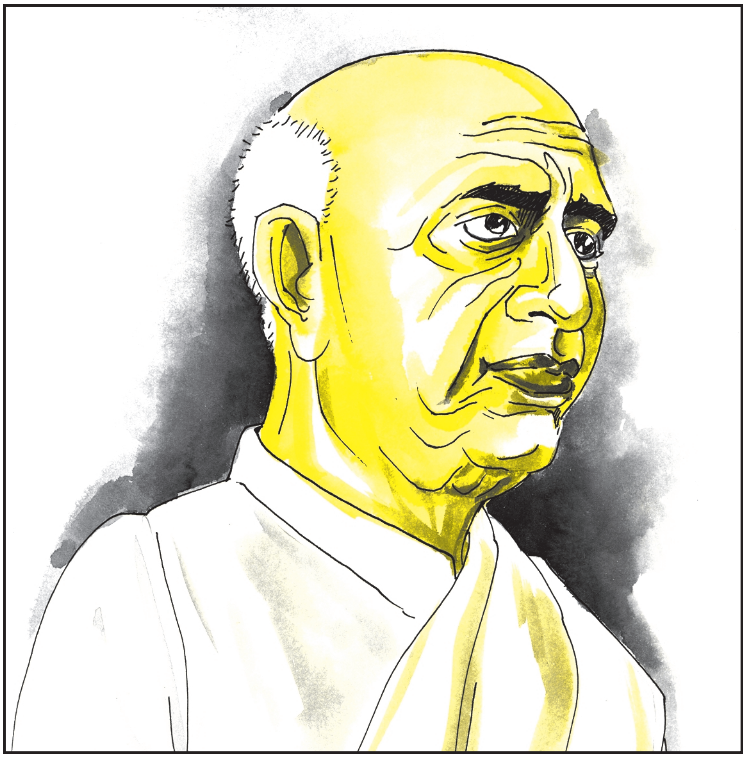

सरदार वल्लभभाई पटेल को हम लौह पुरुष के नाम से जानते हैं। उनकी निडरता और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने के गुणों के कारण उन्हें यह नाम दिया गया था। वल्लभभाई का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नड़ियाद गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम झंवरभाई व माँ का नाम लाड़बाई था। वल्लभभाई बचपन से ही गलत बात का विरोध करते थे। उनको परिणाम की चिंता नहीं रहती थी।

वल्लभभाई के बचपन की एक घटना है। वे प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। स्कूल के अध्यापकों ने प्रकाशकों से बहुत सारा कमीशन लेकर किताबें खरीद लीं। वे सभी बच्चों को स्कूल से ही किताबें खरीदने का दबाव डालने लगे।

अध्यापकों ने कहा– 'कोई भी बच्चा बाजार से किताबें नहीं लाएगा।' किसी भी छात्र ने इसका विरोध नहीं किया। सभी तैयार हो गए।

वल्लभभाई को यह बात बिलकुल नहीं जँची और वे अड़ गए। उन्होंने अध्यापक को बिना डरे कहा– 'अध्यापक का काम पढ़ाना है, किताबें बेचना नहीं। मैं इसका खुला विरोध करता हूँ।' ऐसा कहकर वे कक्षा से उठकर बाहर चले गए और एक स्थान पर आकर खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद और भी विद्यार्थी उनके पास आ गए। वे सभी वल्लभभाई का साथ देने की बात करने लगे। वल्लभभाई का हौसला बढ़ गया। वे एक नेता की तरह छात्रों को संबोधित करने लगे।

अध्यापकों ने छात्रों को डराया-धमकाया लेकिन वल्लभभाई की हिम्मत के कारण सभी छात्र डटे रहे। छात्रों को उनके पालकों तथा नागरिकों का भी समर्थन मिलने लगा। स्कूल 5-6 दिन बंद रहा। हारकर अध्यापकों को अपना व्यापार बंद करना पड़ा। उसके बाद फिर कभी कोई स्कूल से किताबें बेचने की हिम्मत नहीं कर पाया। उन्होंने कभी भी अध्यापकों के दबाव में काम नहीं किया। इसके लिए

उन्हें स्कूल भी छोड़ना पड़ा।

बाद में नड़ियाद से उन्होंने 1897 में मैट्रिक की परीक्षा पास की। उस समय उनकी आयु 22 वर्ष की हो चुकी थी। इसके बाद वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसलिए वे अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सके। परंतु उन्होंने तीन वर्षीय 'डिस्ट्रिक प्लीडर' का कोर्स घर पर रहकर किया। उन्होंने सन् 1900 में अच्छे अंकों से यह परीक्षा पास की और गोधरा में अपनी वकालत शुरू कर दी। दो साल बाद गोधरा छोड़कर वे बोरसाद में आ गए।

वे इग्लैंड जाकर आगे पढ़ना चाहते थे। लेकिन जब उन्हें मालूम हुआ कि उनके बड़े भाई विट्ठलभाई वहाँ पढ़ने जाना चाहते हैं तो उन्होंने पहले उन्हें जाने का मौका दिया। वल्लभभाई ने उनके परिवार की पूरी जिम्मेदारी संभाली। उनके भारत लौटने के बाद ही वल्लभभाई आगे पढ़ने के लिए इग्लैंड गए। वहाँ भी अच्छे नंबरों से पास होकर उन्होंने अपना नाम रोशन किया। उन्होंने वापस आकर अहमदाबाद में वकालात शुरू की। बहुत जल्दी ही वे एक नामी वकील हो गए।

एक बार वे एक मुवक्किल के मुकदमे की पैरवी में व्यस्त थे तभी उन्हें एक तार मिला। उन्होंने तार को पढ़ा और चुपचाप जेब में रख लिया। मुकदमे की बहस कर मुकदमा जीत गए। उनके साथियों ने तार के बारे में पूछा तो बोले– 'मेरी पत्नी का निधन हो गया है।' उनके सारे दोस्त

सकते में आ गए। सभी ने सोचा– 'यह आदमी है या फौलाद'। सबने उनके धैर्य का लोहा मान लिया।

1917 में वल्लभभाई म्युनिसिपल बोर्ड के उपचुनाव में निर्विरोध जीत गए। उसी समय गुजरात क्लब के सेक्रेट्री बनाए गए। वल्लभभाई गाँधीजी से प्रभावित हो चुके थे। यहीं से उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। गाँधीजी के साथ वल्लभभाई ने बेगार विरोधी आंदोलन चलाने का प्रस्ताव पारित किया। वल्लभभाई ने अंग्रेज कमिश्नर के नाम पत्र लिखा। अंग्रेज कमिश्नर ने वह पत्र फाड़कर फेंक दिया। वल्लभभाई ने दूसरा पत्र लिखा। उस पत्र को भी अनदेखा किया गया। तीसरे पत्र में वल्लभभाई ने चेतावनी दे दी। उनकी चेतावनी से सरकार की नींद उड़ गई। उन्होंने वल्लभभाई की बात को सही बताया। बेगार प्रथा समाप्त करने का आश्वासन दिया।

सन् 1918 में खेड़ा सत्याग्रह में वल्लभभाई की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य किसानों का कर माफ कराना था। यह सत्याग्रह चार महीने चला। इस बीच वल्लभभाई ने किसानों के बीच रहकर उनके दु:ख–दर्द बाँटे। वल्लभभाई लगातार किसानों की सभा लेते रहते थे। उनके भाषण आग उगलते थे। वल्लभभाई मुर्दों में भी जान फूँकने की शक्ति रखते थे। उनके भाषणों से किसानों को बहुत हौसला मिलता था। गाँधीजी भी उनके प्रशंसक हो गए थे। सन् 1928 में गुजरात के बारडोली में वल्लभभाई पटेल ने फिर एक सत्याग्रह का बिगुल बजाया। यह खेड़ा सत्याग्रह की तरह ही था, परंतु यह बड़े पैमाने पर था। इसमें

महिलाओं की भी भागीदारी थी। सरकार ने कर की दरें बहुत बढ़ा दी थीं। जो गरीब किसानों के बस की बात नहीं थी। वल्लभभाई ने सभी किसानों से अपील की कि वे बढ़ी हुई दरें न दें। यह सत्याग्रह छः महीने चला। अंत में सरकार को हार माननी पड़ी। पटेल राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रख्यात हो गए। लोगों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि से सम्मानित किया।

सन् 1930 में गाँधीजी ने डांडी यात्रा करने का विचार किया। उन्होंने वल्लभभाई को तैयारी करने के लिए एक सप्ताह पहले भेज दिया। परंतु 7 मार्च को ही सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। यह उनकी पहली जेल यात्रा थी। इसके बाद वे कई बार गिरफ्तार हुए। राजनीतिक गतिविधियाँ काफी बढ़ गई थीं। बार-बार इधर-उधर आने-जाने से उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा। उन्हें हृदय रोग हो गया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान फिर उनकी गिरफ्तारी हुई। उन्हें तीन साल के लिए जेल जाना पड़ा। स्वाधीनता की लड़ाई में वल्लभभाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। जवाहरलाल नेहरू पहले प्रधानमंत्री तथा सरदार वल्लभभाई पटेल उपप्रधानमंत्री बनाए गए। सरदार पटेल ने सभी राज्यों को एक सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण काम किया। उनका दूसरा महत्वपूर्ण योगदान भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के लिए था। उन्होंने आईएएस, आईपीएस और अन्य विभागों का गठन किया तथा इनके प्रशिक्षण के लिए संस्थान खोले। 15 दिसंबर 1950 को उन्होंने अंतिम साँस ली। ❑

हमारे प्रकाशन

श्रेष्ठ कौन	7.00
रोटी का सवाल	7.00
मन का चोर	9.00
कजरी	8.00
रोबोट	8.00
कठौती में गंगा	8.00
सच्ची प्रार्थना	8.00
दो कुओं की कहानी	9.00
सहोदरा	9.00
सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00
चिंगारी	8.00
संत रैदास	8.00
मीराबाई	8.00
गोस्वामी तुलसीदास	8.00
नया जन्म	8.00
सच्चा न्याय	8.00
बातें अनमोल	10.00
कैलाशी नानी	9.00
सूरदास	9.00
गुरु नानकदेव	10.00
लाले का उस्ताद	8.00
झूठ की सजा	8.00
गौतम बुद्ध	9.00
महावीर स्वामी	9.00
ईसा मसीह	9.00
वाणी का कमाल	8.00
मंगू का सपना	8.00
कमजोरी का स्वयंवर	9.00
मानव धर्म	9.00
घड़ाभर अकल	8.50
सुनहरा नेवला	7.00
जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
नहले पर दहला	9.00
माटी के पुतले	11.00
गाँव की लड़की	9.00
भात की पोटली	9.00
संत रहीम	9.00
दोहरी खुशी	9.00
तारों की गिनती	10.00
सद्बुद्धि	9.00
पैगम्बर हजरत मोहम्मद	10.00
जीत का एहसास	9.00
कहावतों की कहानियाँ	9.00
अकेली	10.00
मजबूरी	10.00
बूझो तो जाने	8.00
अकल की दुकान	8.00
सूझबूझ	8.00
दिखावा	10.00
नैतिक कथाएँ भाग-1	8.50
नैतिक कथाएँ भाग-2	8.00
निमाड़ी लोक कथाएँ भाग-1	7.00
निमाड़ी लोक कथाएँ भाग-1	9.00
संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00
देश-प्रदेश की लोक कथाएँ भाग-1	19.00
देश-प्रदेश की लोक कथाएँ भाग-2	10.00

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा भारतीय ग्रामीण महिला संघ

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452020 (म.प्र.)

फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573

मुद्रक- सिद्धार्थ ऑफसेट